इस शोध-कार्य के उपरांत हिंदी और भोजपुरी के परसर्गों के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बातें उभरकर सामने आईं हैं जो निम्नलिखित हैं-

- परसर्ग कारक संबंध को बताता है। परसर्ग रूपात्मक अंश है जो कारक संबंध का द्योतन करता है। कारक संबंध को संकेत करने के लिए कई परसर्ग होते हैं ठीक इसके विपरीत एक परसर्ग कई कारक संबंध को व्यक्त कर सकता है। कारक, संज्ञा और क्रिया के आर्थी संबंध को बताता है जो कारक चिह्न (परसर्ग) के द्वारा व्यक्त किया जाता है। अत: कारक और परसर्ग एक ही सिक्के के दो पहलू हैं एक के बिना दूसरे काम नहीं हो सकता और दूसरे का काम पहले के बिना नहीं हो सकता।
- हिंदी में 'छह कारक' को माना गया है जिसमें कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण इन सबके अपने-अपने चिह्न या परसर्ग हैं कामता प्रसाद गुरु, कैलॉग ने आठ कारक बताया है तथा "कारक चिह्न" को विभक्ति कहा है, तो ज़ाल्मन दीमशित्स और किशोरी दास वाजपेयी ने "परसर्ग" कहा है। संबंधकारक को कारक के अंतर्गत नहीं रखा गया है परंतु इसके चिह्न 'संबंधवाची परसर्ग' के नाम से जाने जाते हैं। वस्तुत: यह कहा जा सकता है कि "कारक चिह्न" को ही परसर्ग कहते है तथा संबंधवाची परसर्ग 'का' 'की' 'के' हैं।
- हिंदी में 'ने' परसर्ग प्रत्यक्ष कर्म को प्रदर्शित करता है और कर्ता कारक ('ने' परसर्ग) का सीधा-सीधा संबंध क्रिया के साथ होता है। भोजपुरी में 'ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता है, क्योंकि कर्ता के रूप में कोई बदलाव नहीं होता है।
- हिंदी में 'को' परसर्ग कर्ता, कर्म, संप्रदान, अधिकरण एवं संबंध कारकों में प्रयोग किया जाता है। परंतु भोजपुरी में कर्ता, कर्म, संप्रदान, और संबंध कारक के लिए 'के' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है।
- हिंदी में 'को' परसर्ग के स्थान पर किसी विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है परंतु भोजपुरी में 'रा' विभक्ति (के) परसर्ग के साथ प्रयुक्त होता है। भोजपुरी में 'रा' विभक्ति जब शब्द के साथ जुड़ जाता है तब शब्द सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होने लगता है।

- हिंदी में 'को' परसर्ग जब कर्म के रूप में वाक्य में प्रयुक्त होता है तब यह प्रत्यक्ष होता है परंतु भोजपुरी में 'के' परसर्ग प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता है पर उसकी अभिव्यक्ति होती है।
- हिंदी में 'से' परसर्ग का प्रयोग कर्ता, कर्म, करण और अपादान कारक के साथ होता है। भोजपुरी में इसका प्रयोग करण, कर्म और अपादान कारक में होता है। परंतु अपादान कारक के परसर्ग के रूप में 'से' का नहीं 'ले' का प्रयोग होता है।
- हिंदी में करण कारक के परसर्ग के रूप में सिर्फ 'से' परसर्ग है। परंतु भोजपुरी में 'से' 'ले' दोनों परसर्गों का प्रयोग होता है।
- हिंदी में अधिकरण कारक के चिह्न या परसर्ग के रूप में "में" या "पर" प्रयुक्त होते हैं परंतु भोजपुरी में "पर" परसर्ग के बदले 'प' परसर्ग का प्रयोग होता है।
- हिंदी में शब्द के साथ "में" परसर्ग जुड़कर बहुवचन का रूप नहीं लेता है परंतु भोजपुरी में "में" परसर्ग जब शब्द के साथ जुड़ता है तो बहुवचन का रूप ले लेता है, जैसे- देसन में, खेतन में। हिंदी में अधिकरण कारक के रूप में विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है परंतु भोजपुरी में "ए" विभक्ति "में" तथा "प" दोनों परसर्गों को व्यक्त करता है जैसे- बजारे, दोकाने।
- हिंदी में संबंध कारक के परसर्ग के रूप में, "का, के, की" का प्रयोग होता है परंतु भोजपुरी में संबंधवाची परसर्ग 'क' और 'के' है। हिंदी और भोजपुरी के संबंधवाची परसर्ग में सबसे बड़ी असमानता यह है कि हिंदी में संबंधवाची परसर्ग वाक्य में लिंग-वचन के प्रभाव के करण प्रयुक्त होते हैं। परंतु भोजपुरी में ऐसा नहीं होता है इन परसर्गों का लिंग से कोई संबंध नहीं है। जैसे- राम क बेटी, राम की बेटी, चिल्होर क बेटा, चिल्होर का बेटा। हिंदी में "का" संबंधवाची परसर्ग है। परंतु भोजपुरी में "का" के स्थान पर 'कर' परसर्ग का प्रयोग होता है, जैसे- इ **उनकर** लइका ह।
- हिंदी में "के लिए" परसर्ग होता है परंतु भोजपुरी में 'खातिर' का प्रयोग होता है। जैसे-

  अमित के लिए मैं घड़ी लेकर आया हूँ।

  अमित खातिर हम घड़ी ले अइनि हई।

- हिंदी और भोजपुरी के मिश्र परसर्ग एक नही हैं। परंतु जैसा कि पहले बताया गया है कि मिश्र परसर्ग शब्द के साथ जुड़कर आते हैं। इसप्रकार हिंदी और भोजपुरी के शब्द अलग-अलग होते हैं। जैसे-

  तू ओकरा संगे चल जा। (भोजपुरी)

  तुम उसके साथ चले जाओ। (हिंदी)

- हिंदी और भोजपुरी में विस्मयादिबोधक चिह्न के रूप यह परसर्ग वाक्य में प्रयुक्त (!) होते हैं तथा बिहार के भभूआ और रोहतास क्षेत्र में'ए हो' का प्रयोग देखा जाता है जो ज़्यादातर प्रयुक्त नहीं होता है इस चिह्न का प्रयोग वाक्य में किसी को पुकारने के लिए भी किया जाता है जैसे – भोजपुरी में ए हो सुन ल।

  अरे सुन।

  और हिंदी में 'ए सुनो' अरे सुन रहे हो। आदि